इकाई 13 काव्य वाचन और विश्लेषण : मैथिली शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 'यशोधरा' के चयनित अशों की व्याख्या

13.3 'साकेत' के चयनित अंशों की व्याख्या

13.4 'अन्वेषण' के चयनित अंशों की व्याख्या

13.5 'वह देश कौन सा है' के चयनित अंशों की व्याख्या

13.6 सारांश

13.7 उपयोगी पुस्तकें

13.0 उद्देश्य

मैथिलीशरण गुप्त और राम नरेश त्रिपाठी आधुनिक हिंदी कविता के अत्यंत प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं। दोनों कवियों के रचना-संसार से हिंदी काव्य समृद्ध हुआ है। इस इकाई में आप मैथिलीशरण की दो चर्चित और महत्वपूर्ण काव्य-कृतियों - 'यशोधरा' और 'साकेत' एवं रामनरेश त्रिपाठी की 'अन्वेषण' और 'वह देश कौन-सा है' के चयनित अंशों का पाठ करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उल्लिखित कवियों की कविताओं की भाव-भूमि से परिचित हो सकेंगे
- कविताओं का रसास्वादन कर सकेंगे
- कवियों की भाषिक विशेषताएँ समझ सकेंगे
- इन कविताओं के माध्यम से कवि की चिंताओं की चर्चा कर सकेंगे
- इन कविताओं के काव्य-सौष्ठव का स्वरूप जान सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि हैं। 'जयद्रथ-वध' और 'भारत भारती' के प्रकाशन से लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचे मैथिलीशरण गुप्त को 1930 में महात्मा गांधी ने राष्ट्रकवि की उपाधि दी थी । उन्होंने प्राचीन आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया अभिप्राय दिया है। जयद्रथवध, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया, यशोधरा, साकेत एवं रत्नावली आदि रचनाएं इसके उदाहरण हैं। 'साकेत' महाकाव्य है तथा शेष सभी काव्य खंड काव्य के अंतर्गत आते हैं।

गुप्त जी ने कुछ नाटक भी लिखे हैं। इन नाटकों में अनघ, तिलोत्तमा, चरणदास, विसर्जन आदि उल्लेखनीय हैं। खड़ी बोली को काव्य भाषा का दर्जा और जन-जन तक पहुंचाने में मैथिलीशरण गुप्त की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। मैथिलीशरण गुप्त जी को साहित्य जगत् में 'दद्दा' नाम से सम्बोधित किया जाता है ।

रामनरेश त्रिपाठी (1881-1962) मैथिली शरण गुप्त की 'भारत भारती' की भाषा और अभिव्यक्ति से अत्यंत प्रभावित हुए थे। इसी प्रभाव के फलस्वरूप उन्होने खड़ीबोली में लिखना शुरू किया था। उन्होंने राष्ट्रप्रेम की कविताएँ लिखीं। इन्होंने कविता के अलावा उपन्यास, नाटक आलोचना, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखीं। इनकी मुख्य काव्य कृतियाँ हैं- मिलन, स्वप्न, पथिक तथा मानसी। इनमें 'मानसी' फुटकर कविताओं का संग्रह है और शेष तीनों कृतियाँ प्रेमाख्यानक खंडकाव्य हैं। रामनरेश त्रिपाठी ने लोक गीतों के चयन के लिए सारे देश का भ्रमण किया। इनकी कविताओं के मुख्यतः दो विषय हैं-देशभक्ति और निर्धन जनता के प्रति सहानुभूति। उनकी कविताओं में राजभक्ति का अभाव तो है ही, तत्कालीन शासन व्यवस्था के प्रति तीव्र व्यंग्य भी परिलक्षित होता है।

13.2 'यशोधरा' के चयनित अंशों की व्याख्या

मैथिली शरण गुप्त की काव्य कृति 'यशोधरा' के चयनित अंश का पाठ करने के पहले आपको यह जान लेना अनुचित न होगा यशोधरा एक खंडकाव्य है। इसमें राजकुमार सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा के मनोभावों का सुंदर चित्रण हुआ है। यशोधरा एक वियोगिनी नारी है। सिद्धार्थ उन्हें रात्रि में सोती हुई छोड़कर राजप्रासाद से चुपचाप संन्यास हेतु निकल जाते हैं। इससे यशोधरा का मन आहत हो जाता है। यशोधरा को इसी बात का दुःख था कि उसके पति ने यह समझ लिया होगा कि वह उनके मार्ग की बाधा बनेगी इसीलिए उसे बिना बताएं घर छोड़कर चले गये। यशोधरा का कहना है कि यदि वे उस पर विश्वास करते और गृहत्याग की बात बता देते तो वह उन्हें पूरा सहयोग देती।

अब आप कवितांश का वाचन कीजिए :

एक

सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात,[1]
सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?

मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में-
क्षात्र-धर्म के नाते।

सखि, वे मुझसे कह कर जाते।
हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहे स्मरण ही आते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

नयन उन्हें हैं निष्ठुर[2] कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते?
गये तरस ही खाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

जायें सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालम्भ[3] दूँ मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते।

गये, लौट भी वे आयेंगे,
कुछ अपूर्व अनुपम लायेंगे,
रोते प्राण उन्हें पायेंगे,
पर क्या गाते गाते?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

गये लौट भी वे आयेंगे,
कुछ अपूर्व अनुपम लायेंगे,
रोते प्राण उन्हें पायेंगे,
पर क्या गाते गाते?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

एक

आइए चयनित अंशों की विस्तृत व्याख्या से परिचय प्राप्त करते हैं -

सिद्धि हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गए, यही बड़ा व्याघात,
सखी, वे मुझसे कह कर जाते
कह, तो क्या मुझसे वे अपनी पथ-बाधा ही पाते ?

संदर्भ और प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा' से उद्धृत हैं। सिद्धार्थ गौतम अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को निद्रावस्था में छोड़कर संन्यास धर्म अपनाने और सिद्धि प्राप्त करने हेतु वन में चले गए। इसके पश्चात यशोधरा इस प्रसंग में दुखी होकर सखी से मन की बात कह रही हैं।

व्याख्या : सिद्धार्थ अपने जीवन के सत्य की खोज में संसार के सुखों का त्याग करके वन में चले गए। जन कल्याण हेतु उनका सत्य की खोज में चले जाना निश्चय ही गौरव और अभिमान की बात है। परंतु यशोधरा कह रही हैं कि वे उनसे छुपकर चले गए, इसलिए उसे बहुत दुख हुआ। यदि वे कहकर जाते तो वह उन्हें रोक नहीं लेतीं, उनके मार्ग कि बाधा नहीं बनतीं। लेकिन सिद्धार्थ ने ऐसा नहीं किया, इसलिए यशोधरा को बहुत कष्ट होता है।

विशेषः

1. 'बड़ा व्याघात' में अनुप्रास, 'चोरी-चोरी' में पुनरुक्तिप्रकाश एवं' तो क्या--- पथबाधा ही पाते' में प्रश्न अलंकार है।
2. स्त्री को सबसे अधिक दुख यह जानकार होता है कि उसका पति उस पर अविश्वास करता है। पति पूर्ण विश्वास की अधिकारिणी नहीं समझता है।
3. इन काव्य-पंक्तियों की भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली हिंदी है।

दो

मुझको बहुत उन्होने माना
फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते
सखी, वे मुझसे कह कर जाते ।

संदर्भ तथा प्रसंग : उपरोक्त पंक्तियाँ मैथिली शरण गुप्त की बहुचर्चित काव्यकृति 'यशोधरा' से अवतरित हैं। सिद्धार्थ गौतम अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को निद्रावस्था में छोड़कर संन्यास धर्म अपनाने और सिद्धि प्राप्त करने हेतु वन में चले गए। इसके पश्चात यशोधरा गौतम के इस आचरण से अत्यंत दुखी होकर अपनी मनोभावनाएँ प्रकट करती है। उसकी मनोदशा का सुंदर चित्रण गुप्त जी ने किया है।

व्याख्याः यशोधरा अपने गृहस्थ-जीवन की स्मृतियों को याद करते हुए कह रही हैं कि उनके पति से उन्हें अत्यधिक स्नेह, प्रेम और दुलार मिला है। वे उन्हें बहुत मानते भी रहे हैं। यशोधरा के मन में एक सवाल गूँजता है कि क्या वास्तव में उनके पति उन्हें पहचानते भी हैं? यदि वे उन्हें भली-भांति पहचानते तो इस तरह रात के अंधेरे में चोरी-छुपे वन चले नहीं गए होते बल्कि उन्हें कहकर ही निकले होते। पुनः वे कहती हैं कि उन्होने आज तक वही किया जो उन्हें पसंद रहा, जो उन्हें रुचिकर प्रतीत हुआ। वह मुख्यतः उसी बात को जान पाती थीं जो उनके मन में रहती थी। बेहतर होता कि वे यशोधरा से कहकर जाते। ऐसा होने पर यशोधरा को कोई मानसिक कष्ट न होता और उन्हें खुशी भी होती कि सिद्धार्थ उनकी मनोभावनाओं को समझते हैं। इससे यशोधरा का आत्म-सम्मान भी बना रहता। वह कभी भी उनकी राह की बाधा न बनती, बल्कि उनके मार्ग को प्रशस्त करने में सहायता कर सकती थी।

विशेष :

1. उपरोक्त अंश में विरहिणी यशोधरा की मनोव्यथा का चित्रण हुआ है।
2. स्त्री के प्रति पुरुष की हीन मनोवृत्ति का परिचय मिलता है।
3. गृहस्थ जीवन की स्मृतियों का स्मरण हुआ है।
4. उपेक्षित और विरहिणी नारी के आत्मसम्मान को कवि ने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।
5. खड़ी बोली कविता का सहज और स्वाभाविक रूप विद्यमान है।
6. नाटक, गीत, प्रबंध, पद्य और गद्य सभी के मिश्रण एक मिश्रित शैली में 'यशोधरा' की रचना हुई है।

तीन

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में-
क्षात्र-धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?

जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहे स्मरण ही आते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

संदर्भ और प्रसंग : पूर्ववत

व्याख्या : यशोधरा कहती है कि भारतीय नारी का इतिहास रहा है कि उसे क्षत्रिय कुल धर्म का पालन करना आता है। प्राचीन काल से स्त्री अपने पति को अस्त्र -शस्त्रों से सुसज्जित करके युद्ध क्षेत्र में भेजती रही है। उस युद्धक्षेत्र में जहां प्राणों की होड़ लगी रहती है। मंगल टीका लगाकर उनकी विजय कामना करते हुए उन्हें युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए प्रेरित करती रही है। जिस नारी की यह परंपरा रही है भला वह सिद्धि प्राप्ति हेतु वन में जानेवाले पति की राह का रोड़ा बनकर क्यों खड़ी होती ? सिद्धि हेतु गमन करने वाले पति को भला वह रोक सकती है? कहने का आशय यह है कि यशोधरा अपने पति के मार्ग की बाधा बनकर कदापि खड़ी होना नहीं चाहती थीं।

यशोधरा यह भी कहती हैं कि यदि सिद्धार्थ उन्हें कहकर जाते तो उन्हें आनंद के साथ विदा करतीं। लेकिन यशोधरा के लिए अपने पति को हर्षपूर्वक विदा करने का भी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। अब तो यशोधरा के लिए मिथ्या गर्व करने के लिए भी कोई अवसर नहीं बचा। जिस पति ने उन्हें अत्यंत प्रेम के साथ अपनाया था उन्हीं ने अब यशोधरा को त्याग भी दिया है। भले ही सिद्धार्थ उन्हें भूल जाएँ लेकिन यशोधरा उन्हें सदैव स्मरण करती रहेगी। अर्थात सिद्धार्थ के प्रति यशोधरा के प्रेम के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

विशेष :

1. उपरोक्त अवतरण में भारतीय स्त्री के क्षत्राणी कुल की परंपरा का उल्लेख मिलता है।
2. भारतीय स्त्री की अविचलता का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।
3. विरहिणी स्त्री की मनोदशा का जीवंत चित्रण किया गया है।
4. उपेक्षित और विरहिणी नारी के आत्मसम्मान को कवि ने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।
5. खड़ी बोली कविता का सरल और सहज रूप विद्यमान है।
6. तत्सम प्रधान भाषा की प्रवाहशीलता देखते ही बनती है।
7. 'स्वयं सुसज्जित', 'प्रियतम-प्राणों-पण -परण' में अनुप्रास अलंकार है।

चार

सखि, वे मुझसे कह कर जाते.....आज अधिक वे भाते।

संदर्भ और प्रसंग : पूर्ववत

व्याख्या : उद्धृत अंश में यशोधरा अपनी शारीरिक दशा का वर्णन करते हुए कहती है कि आँखें उन्हें निष्ठुर कहती हैं क्योंकि उन्होने नेत्रों को बिना बतलाए इस प्रकार त्याग दिया है, परंतु, नेत्रों से बहनेवाली अश्रुधारा को वे दयालु हृदय भला किस प्रकार सह सकते थे। इसलिए उन्होने चोरी-चोरी गृह-त्याग करना ही उपयुक्त समझा। यशोधरा का विचार है कि सिद्धार्थ ने वन जाकर उसके प्रति अच्छा ही आचरण किया। वे सुखपूर्वक सिद्धि प्राप्त करें। कभी भी यशोधरा के दुख से वे पीड़ित न हों। यशोधरा उन्हें किसी भी प्रकार उलाहना नहीं देना चाहती हैं। इस विरहावस्था में भी वे अधिक प्रिय लग रहे हैं, क्योंकि उन्होने संसार के कल्याण हेतु यह त्याग किया है।

विशेष :

1. मैथिली शरण गुप्त ने अवतरित अंश में सिद्धार्थ के प्रति यशोधरा के अमलिन प्रेम का चित्रण किया है। इस प्रेम चित्रण से गुजरते समय हमें गोपियों का कृष्ण प्रेम स्मरण हो आता है। प्रेम में प्रियतम की उद्देश्य और लक्ष्य प्राप्ति की कामना और अपनी स्थिति की परवाह न करना प्रेम को उदात्त बनाता है।
2. अवतरित अंश में नारी का त्याग चित्रित हुआ है।
3. प्रेम भाव में प्रियतम का दोष न ढूँढना और उनसे किसी प्रकार की कोई शिकायत न करना तटस्थता नहीं बल्कि प्रेम की परिपक्वता है।
4. बृहत्तर प्रेम हेतु निजी प्रेम को त्यागने की भावना तत्कालीन युग स्पंदन का प्रतीक है।
5. भाषा की सरलता और सहजता पर कवि का पूरा ध्यान रहा है।
6. तुक के प्रति कवि का ध्यान परिलक्षित होता है।
7. नाटक, गीत, प्रबंध, पद्य और गद्य सभी के मिश्रण एक मिश्रित शैली में 'यशोधरा' की रचना हुई है।

व्याख्या : पाँच गये, लौट भी वे आयेंगे .....सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

संदर्भ और प्रसंग : पूर्ववत

व्याख्या : कविता के अंतिम भाग में यशोधरा की स्पष्ट मान्यता है कि उनके पति भले ही अभी गृहा-त्याग किया है लेकिन उन्हें सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी। इस सिद्धि प्राप्ति के पश्चात उनका पुनरागमन होगा और तभी यशोधरा के व्यथित प्राण उन्हें प्राप्त कर सकेंगे। उनके दर्शन करेंगे। यह सिद्धि उनसे अधिक संपूर्ण लोक के कल्याण हेतु फलप्रसू होगी।

विशेष :

1. गुप्त जी ने भारतीय नारी के अपूर्व उज्ज्वल जीवन की एक मधुर झलक दिखाई है। विलासिता से दूर भारतीय स्त्री अपने पति को पूर्णतया सहयोग प्रदान करती है। यदि इसे परंपरा कहें तो 'सखि वे मुझसे कहकर जाते' में उसका आत्मसम्मान, स्वाभिमान छिपा हुआ है जो नवीनता का सूचक है। इस तरह से यशोधरा में प्राचीनता और नवीनता का सुंदर समन्वय साधित हुआ है। तत्कालीन भारतीय संदर्भ पर ध्यान केन्द्रित करें तो पाते हैं कि गांधीजी ने अधिक अधिक से संख्या में स्त्रियों को भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए आह्वान किया था। इस दृष्टि से यशोधरा का चरित्र और व्यक्तित्व विशेष प्रासंगिक है।
2. बृहत्तर प्रेम हेतु निजी प्रेम को त्यागने की भावना तत्कालीन युग स्पंदन का प्रतीक है।
3. भाषा की सरलता और सहजता पर कवि का पूरा ध्यान रहा है।
4. तुक के प्रति कवि का ध्यान परिलक्षित होता है।

इस संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन दृष्टव्य है- "मैथिलीशरण गुप्त ने संपूर्ण भारतीय पारिवारिक वातावरण में उदात्त चरित्रों का निर्माण किया है। उनके काव्य शुरू से अंत तक प्रेरणा देने वाले हैं। उनमें व्यक्तित्व का स्वतः समुच्छित उच्छ्वास नहीं है, पारिवारिक व्यक्तित्व का और संयत जीवन का विलास है। वस्तुतः गुप्तजी पारिवारिक जीवन के कथाकार है। परिवार का अस्तित्व नारी के बिना असंभव है। इसीलिए वे नारी

को जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। नारी के प्रति उनकी दृष्टि रोमानी न होकर मर्यादावादी और सांस्कृतिक रही है। वे अपने नारी पात्रों में उन्हीं गुणों की प्रतिष्ठा करते हैं, जो भारतीय कुलवधू के आदर्श माने गये हैं। उनकी दृष्टि में नारी भोग्य मात्र नहीं अपितु पुरुष का पूरक अंग है। इसीलिए उनके काव्य में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व स्वाभिमान, दर्प और स्वावलम्बन का समुचित चित्रण हुआ है। उनके काव्य में नारी, अधिकारों के प्रति सजग, शीलवती, मेधाविनी, समाजसेविका, साहसवती, त्यागशीलता और तपस्विनी के रूप में उपस्थित हुई है।"

मैथिली शरण गुप्त ने संयुक्त परिवार को सर्वोपरि महत्व दिया है। उन्होने नैतिकता और मर्यादा से युक्त सहज सरल पारिवारिक व्यक्ति को श्रेष्ठ माना है। नर - नारी के प्रति गुप्तजी की पूर्ण आस्था है। इस आस्था के दर्शन उनके काव्य में देखे जा सकते हैं। आस्था की टूटन गुप्तजी के लिए असहनीय है। उन्हें नारी के प्रति पुरुष का अनुचित आचरण कदापि स्वीकार नहीं है।

13.3 'साकेत' के चयनित अंशों की व्याख्या

आप जानते हैं कि 'साकेत' मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित एक महाकाव्य है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी गुप्त जी के साहित्यिक गुरु थे। उनकी प्रत्यक्ष प्रेरणा से 'साकेत' की रचना हुई है। इस महाकाव्य के केंद्र में उर्मिला है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के निबंध 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' पढ़ने के बाद एक लंबे अरसे तक इस महाकाव्य की रचना में कवि ने अपने को नियोजित किया। 'साकेत' में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के विरह को अत्यंत मार्मिकता के साथ नवां सर्ग में अंकित किया गया है। इसके अतिरिक्त कैकैयी के चरित्र पर लगे कलंक पर नए सिरे से विचार करते हुए कवि ने उनके मातृत्व को चित्रित किया है। आपके लिए चुने गए अंश में सीता का वर्णन हुआ है। ध्यान दें कि कवि ने रामकथा की पुनरावृत्ति के उद्देश्य से 'साकेत' की रचना नहीं की है। आप देख पाएंगे कि इसमें कवि ने अपने समय की स्थितियों और चेतनाओं का भी समावेश किया है। आपका अध्येतव्य विषय 'साकेत' के अष्टम सर्ग से अवतरित किया गया है। इस सर्ग में सीता-राम के चित्रकूट का जीवन, भरत के साथ अयोध्यावासियों का राम को मनाना, कैकेयी का अनुताप, लक्ष्मण-उर्मिला का मिलन और अंत में राम की पादुका लेकर भरत के लौटने का प्रसंग वर्णित है। बहरहाल आपके लिए 'साकेत' के चयनित अंश का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें :

निज सौध[1] सदन में उटज[2] पिता ने छाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर हैं,
देते आकर आशीष हमें मुनिवर हैं।

धन तुच्छ यहाँ-यद्यपि असंख्य आकर हैं,
पानी पीते मृग-सिंह एक तट पर हैं।

सीता रानी को यहाँ लाभ ही लाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
क्या सुन्दर-लता-वितान[4] तना है मेरा,
पुंजाकृति गुंजित कुंज घना है मेरा।
जल निर्मल, पवन पराग-सना है मेरा,

गढ़ चित्रकूट -दृढ़-दिव्य बना है मेरा।
प्रहरी[5] निर्झर[6], परिखा प्रवाह की काया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ।
श्रमवारिबिन्दुफल[7] स्वास्थ्यमुक्ति फलती हूँ,
अपने अंचल से व्यंजन आप झलती हूँ।

तनु-लता-सफलता-स्वादु आज ही आया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

जिनसे ये प्रणयी प्राण त्राण पाते हैं,
जो भरकर उनको देख जुड़ा जाते हैं।
जब देव कि देवर विचर-विचार आते हैं,
तब नित्य नये दो-एक द्रव्य लाते हैं।

उनका वर्णन ही बना विनोद सवाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

किसलय[8]-कर स्वागत-हेतु हिला करते हैं,
मृदु मनोभाव-सम सुमन खिला करते हैं।
डाली में नव फल नित्य मिला करते हैं
तृण तृण पर मुक्ता-भार झिला करते हैं।
निधि खोले दिखला रही प्रकृति निज माया,

मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने में अब हाथ लगा है मेरा,
वन में ही तो गार्हस्थ[9] जगा है मेरा।

वह वधु जानकी बनी आज यह जाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

फल-फूलों से हैं लदी डालियाँ मेरी,
वे हरी पत्तलें, भरी थालियाँ मेरी।
मुनि बालाएँ हैं यहाँ आलियाँ मेरी,
तटिनी की लहरें और तालियाँ मेरी।

क्रीड़ा-सामग्री बनी स्वयं निज छाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

मैं पली पक्षिण[10] विपिन-कुंज-पिंजर[11] की,
आती है कोटर-स-श[12] मुझे सुध घर की।
मृदु-तीक्ष्ण वेदना एक एक अन्तर की,
बन जाती है कल-गीति समय के स्वर की।

कब उसे छेड़ यह कण्ठ यहाँ न अघाया?
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

गुरूजन-परिजन सब धन्य ध्येय हैं मेरे,
औषधियों के गुण-विगुण[13] ज्ञेय[14] हैं मेरे
वन-देव-देवियाँ आतिथेय हैं मेरे,
प्रिय-संग यहाँ सब प्रेय श्रेय है मेरे।

मेरे पीछे ध्रुव[15]-धर्म स्वयं ही धाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

नाचो मयूर, नाचो कपोत के जोड़े।
नाचो कुरंग, तुम लो उड़ान के तोड़े।
गाओ दिवि, चातक चटक, भृंग[16] भय छोड़े
वैदेही के वनवास-वर्ष हैं थोड़े।

तितली, तूने यह कहाँ चित्रपट[17] पाया?
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

आओ कलापि[18] निज चन्द्रकला[19] दिखलाओ
कुछ मुझसे सीखो और मुझे सिखलाओ।
गाओ पिंक, मैं अनुकरण करूँ, तुम गाओ,
स्वर खींच तनिक यों उसे घुमाते जाओ।

शुक पढ़ो- मधुर फल प्रथम तुम्हीं ने खाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन -भाया।

अयि राजहंसि, तू तरस क्यों रोती,
तू शुक्ति-वंचिता[20] कहीं मैथिली[21] होती।

शब्दार्थ

1.दुःख 2. निर्दय 3. उलाहना 4.लताओ. का खेमा या चँदोवा 5. पहरेदार 6. झरना 7. परिश्रम से आयी पसीने की बूँदे. 8. नया निकला हुआ कोमल पत्ता 9.गृहस्थी 10.मादा पक्षी 11.वन बगीचे रूपी, पिंजरा 12. पेड़ का खोखला भाग जिसमे पक्षी निवास करते है 13. गुण- दोष 14 जानने योग्य बात 15. निश्चित -ढ़ 16. एक तरह का कीड़ा 7. वह कपड़ा जिस पर चित्र बना हो 18. च.द्रमा 19. चाँदनी 20. सीपी से वंचित 21. सीता

आइए चयनित अंशों की विस्तृत व्याख्या करते हैः-

एक

औरों के हाथों नहीं यहां पलती हूँ

अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ
श्रमवारि बिन्दु फल स्वास्थ्य मुक्ति फलती हूँ
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ
तनु-लता-सफलता- स्वादु आज ही लाया।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

संदर्भ और प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'साकेत' से ली गई हैं। 'साकेत' में गुप्तजी ने रामकथा को आधार बनाया है। किन्तु उनका उद्देश्य एक कथा को दोहराना नहीं है। बल्कि इस कथा के माध्यम से वह आधुनिक युग की जरूरतों, परिस्थितियों और समस्याओं की अभिव्यक्ति और समाधान प्रस्तुत करते हैं।

यही कारण है कि इन पंक्तियों में राजरानी सीता को स्वावलंबी रूप से प्रस्तुत किया गया है। महलों के सुख साधनों को छोड़कर वन में आई सीता अपनी स्थिति से प्रसन्न और संतुश्ट है। राजभवन के भोग विलास की तुलना में वन का यह स्वच्छन्द और प्रद्भत जीवन उसे भाता है इसीलिए वह कहती है-

व्याख्या : वन में मैं औरों के हाथों नहीं पलती यानी दास-दासियों की सेवा पर आधारित नहीं हूँ बल्कि अपना काम स्वयं करती हूँ। अपने पैरों पर चलने का अर्थ है कि अब मैं

स्वावलंबी हूँ। यहां पंखा झलने वाली दासियां नहीं हैं। इसीलिए मैं अपने आँचल से स्वयं अपने ऊपर पंखा झलती हूँ यह स्वावलंबन मेरे लिए बड़ा ही उपयोगी है क्योंकि श्रम करके जो पसीना बहाती हूँ उसका समुचित फल भी मुझे मिलता है। यानी परिश्रम करने के कारण मुझे स्वास्थ्य लाभ होता है। शारीरिक श्रम से मिलने वाले आनंद को मैंने आज ही जाना है। इसीलिए मुझे अपनी कुटिया में किसी तरह का अभाव नहीं महसूस होता बल्कि राजभवन जैसा ही आनंद मिलता है। यह कुटिया मेरे मन को राजभवन से भी अधिक भाती है क्योंकि इसने मुझे स्वावलंबी बनाया और मैं मन चाहा कार्य स्वयं कर सकती हूँ।

विशेषः

1. इन पंक्तियों में लेखक ने स्वावलंबन का महत्व बताया है जो गांधी युग की विशेषता है।
2. सीता के पारंपरिक देवी रूप की बजाय उसे मनुष्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. खड़ी बोली कविता का सहज और सुंदर रूप इन पंक्तियों में मौजूद है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।

दो

किसलय[8] -कर स्वागत-हेतु हिला करते हैं,
मृदु मनोभाव-सम सुमन खिला करते हैं।
डाली में नव फल नित्य मिला करते हैं
तृण तृण पर मुक्ता-भार झिला करते हैं।
निधि खोले दिखला रही प्रकृति निज माया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

संदर्भ और प्रसंग : उपर्युक्त कवितांश मैथिली शरण गुप्त के महाकाव्य 'साकेत' के अष्टम सर्ग से लिया गया है। राम-सीता और लक्ष्मण को अयोध्या लौटा लेने के लिए अयोध्या के निवासी चित्रकूट पहुंचे हुए हैं। कवि ने सीता के माध्यम से चित्रकूट की प्राकृतिक सुषमा का चित्रण किया है।

व्याख्या : चित्रकूट की अपरूप शोभा का चित्रण करते हुए सीता कहती हैं कि नए और कोमल पत्ते स्वागत हेतु अपने हाथ हिला करते हैं। मनुष्य के कोमल मनोभाव प्रकट करने के लिए मानो फूल खिला करते हैं। चित्रकूट फलों से लदा हुआ है। इसलिए डाली में नित्य नए फल भरे रहते हैं। तृण -तृण पर ओंस की बूंदें मुक्ता सदृश झिलमिलाते रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने अपना अमाप रत्न-भंडार उन्मुक्त कर दिया है। वह अपनी माया से जड़-चेतन सबको मंत्रमुग्ध किए जा रही है। इसीलिए मुझे अपनी कुटिया में किसी तरह का अभाव नहीं महसूस होता बल्कि राजभवन जैसा ही आनंद मिलता है।

विशेष :

1. उपर्युक्त अंश की पहली पंक्ति में कवि ने मानवीकरण का सुंदर प्रयोग किया है।
2. प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा का मनोरम चित्रण हुआ है।
3. मानव और प्रकृति के अभिन्न संबंध को भी इस पद से जाना जा सकता है।
4. सीता के पारंपरिक देवी रूप की बजाय उसे मनुष्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।
5. खड़ी बोली कविता का सहज और सुंदर रूप इन पंक्तियों में मौजूद है।
6. किसलय, स्वागत, मृदु, तृण, मुक्ता, निधि, प्रकृति जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

तीन

गुरुजन-परिजन सब धन्य ध्येय हैं मेरे,
औषधियों के गुण-विगुण[13] ज्ञेय[14] हैं मेरे
वन-देव-देवियाँ आतिथेय हैं मेरे,
प्रिय-संग यहाँ सब प्रेय श्रेय है मेरे।

मेरे पीछे ध्रुव[15] -धर्म स्वयं ही धाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

संदर्भ और प्रसंग : पूर्ववत

व्याख्या : चित्रकूट की शोभा और सम्पदा से सीता गदगद हैं। सीता अपने गुरुजनों और आत्मीय लोगों को धन्य समझती हैं जो उनके ध्येय में हैं। औषधीय गुणों से परिपूर्ण पेड़-पौधों को सीता पहचान चुकी हैं। वन के देवी-देवताओं की आतिथेयता से वे परम प्रसन्न हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सीता अपने पति के साथ हैं। इसलिए यहाँ उन्हें सब कुछ उन्हें प्रिय लगता है। चित्रकूट का सब कुछ उन्हें श्रेष्ठ लगता है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि चित्त प्रसन्न हो तो मनुष्य को दुख-कष्ट भी नहीं सालते। उसे सब कुछ प्रेममय और आनंदमय प्रतीत होता है। चित्रकूट के सघन वन में भी सीता अपने पति के साथ होने के कारण न केवल वह संतुष्ट हैं बल्कि परम प्रसन्न भी हैं। राम के साथ रहने का आशय है कि अटल धर्म भी उन्हीं का पीछा कर रहा है। इसीलिए सीता को धर्म-अधर्म की चिंता में चिंतित होने की क्या आवश्यकता है? सीता कहती हैं अर्थात कवि कहता है कि उन्हें अपनी कुटिया में किसी तरह का अभाव नहीं महसूस होता बल्कि राजभवन जैसा ही आनंद मिलता है।

विशेष :

1. इस पद में चित्रकूट पर्वत के औषधीय गुणवाले वृक्षों और लता-गुल्मों की प्रशंसा की गई है।
2. सीता के पारंपरिक देवी रूप की बजाय उसे मनुष्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. भारतीय परंपरा में विश्वास है कि पति के साथ पत्नी कहीं भी रहे तो उसे परम संतोष की प्राप्ति होती है।
4. खड़ी बोली का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है।
5. लोकविश्वास है कि वन में रहने वाले सभी प्राणियों की रक्षा वनदेवी और वनदेवता करते हैं।

(आपके के लिए 'साकेत' के अध्येतव्य पाठ में से तीन पदों की व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। आशा है कि अब आप 'साकेत' के अन्य पदों की व्याख्या स्वयं कर सकेंगे। दिये गए शब्दार्थ की सहायता ले सकते हैं।)

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'यशोधरा' के दुख का कारण क्या है ? अपने शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

2. यशोधरा की कोई दो चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

3. चित्रकूट में पक्षी जगत से सीता के संबंध का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

4. चित्रकूट के प्राकृतिक सौंदर्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

अभ्यास :

1. पठित कविताओं के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की नारी चेतना का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

13.4 'अन्वेषण' के चयनित अंशों की व्याख्या

द्विवेदी युगीन, किन्तु द्विवेदी-मण्डल से बाहर रहकर अपने समग्र-साहित्य द्वारा एक विशिष्ट एवं अन्यतम स्थान बना लेने वाले इस महान कवि रामनरेश त्रिपाठी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का गहन अध्ययन आपने कर लिया होगा। अब आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित त्रिपाठी जी द्वारा विरचित दो कविताएँ 'अन्वेषण' एवं 'वह देश कौन-सा है?' सर्वप्रथम इन कविताओं का गम्भीरता से वाचन करें और तदुपरान्त इसके प्रमुख अंशों की सप्रसंग व्याख्या। साधारण एवं सरल अंशों की व्याख्या का प्रयास आप स्वयं करें। तो आइए, सर्वप्रथम 'अन्वेषण' कविता वाचन करें।

काव्य वाचन तथा संदर्भ सहित व्याख्या

अन्वेषण

मैं ढूंढता[1] तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में,

तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।

मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वारा पर तू,
मैं बाट जोहता[2] था तेरी किसी चमन में।

बन कर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू,
मैं देखता तुझे था माशूक[3] के बदन में।

दुख से रूला-रूलाकर तुने मुझे चिताया[4],
मैं मस्त हो रहा था तब हाय। अंजुमन[5] में।

बाजे बजा-बजाकर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों[6] के संगठन मे।

मैं था विरक्त[7] तुझसे जग की अनित्यता[8] पर,
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में।

तू बीच में खड़ा था बेबस गिरे हुओं के,
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहां चरण में?

हरिश्चंद्र और ध्रुव ने कुछ और ही बताया,
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप[9] धन में।

तेरा पता सिकन्दर को मैं समझ रहा था।
पर तू बसा हुआ था फ़रहाद कोहकन में[10]

क्रीसस की ''हाय'' में था करता विनोद तू ही,
तू ही विहँस रहा था महमूद[11] के सदन में।

प्रह्लाद जानता था तेरा सही ठिकाना,
तूही मचल रहा था सुहराब पील-तन में।

कैसे तुझे मिलूँगा जब भेद इस कदर है?
हैरान होके भगवन। आया हूँ मैं सरन में।

तू रूप है किरन में सौन्दर्य है सुमन में,
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।

ज्ञान हिन्दुओं में, ईमान मुसलिमों में,
विश्वास क्रिश्चियन में, तू सत्य है सुजन में।

हे दीनबन्धु। ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू,
देखूँ तुझे -दृगों में, मन में तथा बचन में।

कठिनाइयों, दुखों का इतिहास ही सुयश है,
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में।

दुख में न हार मानूँ, मुख में तुझे न भूलूँ
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर[12] मन में।

(स्फुट)

शब्दार्थ :

1.खोज 2. इंतजार करना 3. प्रेमिका 4. जगाना या याद दिलाना 5. महफिल या मजलिस 6. गिरे हुए 7. उदासीन 8. अस्थिरता 9. ताकत 10. पहाड़ खोदकर नहर निकालने वाले (शीरी-फरहाद के नायक) में 11. जो स्तुत्य या प्रशसनीय हो 12. बेचैन या धैर्यहीन

एक

"मैं ढूंढता तुझे था..... बदन में।"

संदर्भ और प्रसंग :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि मनुष्य अपने भीतर परमात्मा को न खोजकर बाहर वन और उपवन में खोजता रहता है, जबकि परमात्मा स्वयं दीन-दुखियों के लोक में मानव की खोज करता रहता है।

व्याख्या :

परमात्मा किसी गरीब-दुखी की आह में बसता है, जब वह हमसे मदद की गुहार लगाता है, जबकि हम उसे संगीत-भजन के माध्यम से याद करते रहते हैं। परमात्मा जब दुखियों के दरवाजे पर हमारी प्रतीक्षा कर रहा था कि हम अपने मानव होने का परिचय देंगे और गरीबों की मदद करेंगे तब हम उसकी प्रतीक्षा किसी बागीचे में कर रहे थे। परमात्मा किसी के आँसू में करुणा का प्रतिरूप बनकर हमारे समक्ष प्रकट हुआ, जबकि मनुष्य उसे प्रेमिका के शरीर में देख रहा था। कहना न होगा कि कवि लैला-मजनूं के प्रेम प्रसंग की ओर संकेत कर रहा है, जबकि परमात्मा का मानव के प्रति प्रेम अशरीरी और अलौकिक है। कवि का ऐसा मानना है कि परमात्मा हमें हमसे अधिक प्रेम करता है। उसे स्वयं के भीतर अन्वेषित किया जाना चाहिए। ऐसा करने पर हमें उसे किसी स्थान विशेष पर खोजने जाने की जरूरत नहीं रह जाएगी। वह इस सृष्टि के अणु-अणु में विद्यमान है। उसके लिए आडंबर की कोई आवश्यकता नहीं है।

विशेषः

1. उपर्युक्त पंक्तियों का साम्य निम्नलिखित पंक्तियों से देखा जा सकता है- "मोको कहाँ ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास रे।"
2. कवि ने 'बाट जोहना' कहावत का प्रयोग सुंदर तरीके से किया है।
3. कवि ने तत्सम शब्दों के साथ विदेशज शब्दों का कहीं-कहीं मेल कराया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा विषयक शुष्कता से उन्हें किंचित पृथक् ठहराता है।
4. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

दो

"दुख से रुला-रुलाकर..... चरन में?

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि दुख में रुला-रुलाकर परमात्मा ने ही मानव को जागृत किए रखा जबकि मनुष्य तब अपनी मजलिस जुटाने में व्यस्त था। यह मानव को करुणा के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रश्न भी है। मानव जब वाद्य-यंत्रों को बजा-बजाकर परमात्मा को प्रसन्न करने की जुगत भिड़ा रहा था, तब परमात्मा पतितों-दलितों के त्राण में जुटा हुआ था। मानव जब जग की अस्थिरता या क्षणभंगुरता के प्रति उदासीनता का अनुभव कर रहा था, तब परमात्मा पतन के मध्य उत्थान के बारे में सोच रहा था। परमात्मा जब जीवन में हारे हुए लोगों के बीच आशा की किरण बनकर आविर्भूत हुआ था, तब भी मानव उसके स्वर्ग में होने की उम्मीद कर रहा था। वह यही सोच रहा था कि स्वर्ग में कैसे उस तक पहुँचा जाए या कि स्वर्ग को कहाँ खोजा जाए।

विशेषः

1. 'बाजे बजा-बजाकर' में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।
2. 'बजा-बजाकर' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार की छटा दर्शनीय है।
3. उपर्युक्त पंक्तियों में कवि का इहलौकिक दृष्टिकोण दर्शनीय है।
4. कवि ने तत्सम शब्दों के साथ विदेशज शब्दों का कहीं-कहीं मेल कराया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा विषयक शुष्कता से उन्हें किंचित पृथक् ठहराता है।
5. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

तीन

"हरिश्चंद्र और.....पील तन में।"

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि राजा हरिश्चंद्र और ध्रुव की कथा यह संदेश देती है कि सत्य और निस्वार्थ भक्ति से ही परमात्मा को पाया जा सकता है। उसकी अनुकंपा को धन-संपदा से जोड़कर देखना अनुचित है। मानव ईश्वर की कल्पना विश्व विजेता सिकंदर की तरह करता है, जबकि ईश्वर तो फरहाद की तरह पहाड़ खोदकर नहर निकालने को ही श्रेयस्कर समझ रहा था। परमात्मा यीशू की हाय में विद्यमान था क्योंकि उन्होंने सारे संसार का अपराध स्वयं में धारण कर लिया, जबकि उन्हें सलीब पर चढ़ा दिया गया। इसके बावजूद उन्होंने संसार के सारे अपराधों को क्षमा कर दिया। परमात्मा ही इस संसार रूपी स्तुत्य सदन में विहँस रहा था। वह रुदन-करुणा और विहास का प्रतिरूप है। कवि यह कहना चाहते हैं कि भक्त प्रह्लाद परमात्मा का सही ठिकाना जानते थे क्योंकि परमात्मा उनके मन में ही था। इसके अलावा परमात्मा ही सुहराब के तन में बसता था। कहना न होगा कि कवि यह संकेत कर रहा है कि परमात्मा हमारे मन में ही विद्यमान है। यदि हमारा अंतःकरण शुद्ध है तो वह हमारे समीप ही है।

विशेषः

1. कवि ने तत्सम शब्दों के साथ विदेशज शब्दों का कहीं-कहीं मेल कराया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा विषयक शुष्कता से उन्हें किंचित पृथक् ठहराता है।
2. उपर्युक्त पंक्तियों का साम्य निम्नलिखित पंक्तियों से देखा जा सकता है- "मोको कहाँ ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास रे।"
3. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

चार

"कैसे तुझे..... अधीर मन में।

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं.रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि जब इस संसार में इतना भेद-वैषम्य है तो ईश्वर की शरण में जाने के अलावा और कहाँ जाया जा सकता है। ईश्वर रूप-किरण है। वही सुमन के सौंदर्य में बसता है। वह प्राण-वायु के समान है तथा आकाश के समान अनंत है। वही हिंदुओं की चेतना, मुसलमानों का ईमान, ईसाइयों का विश्वास और सुजन का सत्य है। कवि परमात्मा, जो गरीब-नवाज है, से यह प्रार्थना करता है कि वह उसे ऐसी प्रतिभा प्रदान करे कि कवि उसे (परमात्मा को) अपने मन, वचन और अपनी आँखों में बसा ले। कवि यह वरदान मांगता है कि वह कष्ट सहन करने में सक्षम बने क्योंकि जिसने जीवन में कठिनाइयाँ और दुरूख नहीं देखा, वह छोटी-सी समस्याओं से भी घबरा जाता है। कवि यह इच्छा रखता है कि परमात्मा उसके अधीर मन को ऐसा बना दे कि वह दुःख में कभी न हारे और सुख में भी परमात्मा को याद करे। आलोच्य पंक्तियों में कवि ने ईश्वर को लेकर किए जाने वाले अंधविश्वास और बाह्याचारों का विरोध किया है।

विशेषः

1. कवि ने तत्सम शब्दों के साथ विदेशज शब्दों का कहीं-कहीं मेल कराया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा विषयक शुष्कता से उन्हें किंचित पृथक् ठहराता है।

2. उपर्युक्त पंक्तियों का साम्य निम्नलिखित पंक्तियों से देखा जा सकता है-

"दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।"

3. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है वह देश कौन सा है।

13.5 'वह देश कौन सा है' के चयनित अंशों की व्याख्या

मनमोहिनी[1] प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

जिसका चरण निरन्तर रत्नेश[2] धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?

नदियाँ जहाँ सुधा[3] की धारा बहा रही है
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?

जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?

जिसके सुगंध वाले सुन्दर प्रसून[4] प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?

मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकतीं[5]
आनंदपथ जहाँ हैं, वह देश कौन -सा है?

जिसकी अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि[6] वह देश कौन-सा है?

सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है?

पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन-सा है?

जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्म ज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतंजल, वह देश कौन-सा है?

छोड़ स्वराज तृणवत[7] आदेश से पिता के,
वह राम थे जहाँ पर, वह देश कौन-सा है?

निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे,
लक्ष्मण भरत सरीखे, वह देश कौन-सा है?

आदर्श नर जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी,
हनुमान, भीष्म, शंकर वह देश कौन-सा है?

विद्वान् वीर, योगी, गुरू राजनीतिकों के,
श्रीकृष्ण थे जहाँ पर, वह देश कौन-सा है?

विजयी बली जहाँ के बेजोड़ शूरमा थे,
गुरू, द्रोण, भीम, अर्जुन, वह देश कौन-सा है?

जिसमें दधीचि, दानी हरिश्चंद्र, कर्ण से थे,
सब लोक का हितैषी वह देश कौन-सा है?

वाल्मीकि व्यास ऐसे जिसमें महान् कवि थे,
श्रीकालिदास वाला वह देश कौन-सा है?

निष्पक्ष[8] न्यायकारी जन जो पढ़े लिखे हैं,
वे सब बता सकेंगे, वह देश कौन-सा है?

हैं तीस कोटि[9] भाई, सेवक, सपूत जिसके,
भारत सिवाय दूजा वह देश कौन-सा है।

शब्दार्थ :

1. मन को मोहने वाली 2. समुद्र 3. अमृत 4. फल-फूल 5. लहराती 6. मस्तक पर धारण करने योग्य 7. तिनके के समान 8. तटस्थ या बिना किसी पक्षपात के 9. करोड़

एक

"मनमोहिनी प्रकृति की.....वह देश कौन-सा है?"

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं.रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि मन को मोहित करने वाली प्रकृति की गोद में भारत ही बसा है। यही वह देश है, जहाँ स्वर्गीय सुख विद्यमान हैं। यही वह भारत-भूमि है, जिसके पाँव सागर पखारता है। यही वह भारत देश है, जिसका मुकुट हिमालय जैसा विश्व का सबसे महान पर्वत है। अनंत काल से नदियाँ इस देश में अमृत की धारा प्रवाहित करती रही हैं। उनके द्वारा सींचकर यहाँ की मिट्टी को उपजाऊ बनाया जाता रहा है। इस मिट्टी में बड़े ही रसीले फल होते हैं। यहाँ के कंद-मूल, अनाज और मेवे सब मिलकर इस माटी की महिमा की श्रीवृद्धि करते हैं। यही वह देश है, जहाँ सुंदर पुष्प दिन-रात विहँसते रहते हैं। यहाँ के मैदानों, पर्वतों एवं वनों में हरियाली कुछ उसी प्रकार लहकती रहती है, जिस प्रकार अग्नि बढ़ती हुई बड़ी तीव्रता से प्रांतर को अपने कब्जे में ले लेती हैय यहाँ आनंदपथ चतुर्दिक व्याप्त हैं। कहना न होगा कि ऐसे सुख की परिकल्पना भारत-भूमि पर ही की जा सकती है। संबंधित अवतरण में कवि का देश-प्रेम स्पष्टतः देखा जा सकता है।

विशेषः

1. कवि ने तत्सम शब्दों का यहाँ सुंदर प्रयोग किया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा की अपनी विशेषता है।
2. संदर्भित पंक्तियों में प्रकृति-सौंदर्य का अद्‌भुत नियोजन हुआ है।
3. उपर्युक्त पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य के कई सुंदर प्रयोग दर्शनीय हैं-रसीले फल, सुंदर प्रसून आदि दृष्टव्य हैं।
4. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

दो

"जिसकी अनंत धन से .....पतंजल, वह देश कौन-सा है?"

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि भारत की धरती अनंत धनराशि से संपन्न है। भारत संसार के सब देशों का शिरोमणि है क्योंकि यह देश

तब सभ्य था, जब संसार में सभ्यता का अता-पता तक नहीं था। इन पंक्तियों में कवि सिंधु घाटी की सभ्यता की बात उठाता है। यहाँ कवि ने अंग्रेजी साम्राज्यवादी शक्तियों की इस बात का स्पष्टतः उत्तर दिया है कि भारत का वे उपकार करते हैं, जब वे यहाँ शासन करते हैं क्योंकि भारतीय असभ्य हैं। वे स्वयं पर शासन नहीं कर सकते हैं। अंग्रेजों का ऐसा मानना असत्यपरक एवं छल-छद्मयुक्त था। कवि के अनुसार वास्तविकता यह है कि भारत देश ईश्वर का दुलारा देश है, इसने जगत-गुरु बनकर संसार को जागृत किया है। इसने संसार को शिक्षित किया एवं उसे सुधारा भी। इस देश के दर्शन मानवता के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहे हैं। यह ऋषियों-मनीषियों की भूमि रही है। ये तत्त्व-ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी हुआ करते थे। इस देश ने गौतम, कपिल, पतंजलि जैसे वरीय जनों को पैदा किया। यह भूमि महत्व है।

विशेष :

1. कवि ने तत्सम शब्दों का यहाँ सुंदर प्रयोग किया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा की अपनी विशेषता है।

2. उपर्युक्त पंक्तियों में भारत की गौरवमयी चिंताधारा का जिक्र हुआ है।

3. इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

तीन

"छोड़ स्वराज तृणवत ..... अर्जुन, वह देश कौन-सा है?

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं.रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि यह वही देश है, जहाँ भगवान श्री राम ने अपने पिता दशरथ के आदेश पर स्वराज को तिनके की तरह त्याग दिया था। उनके भाई लक्ष्मण एवं भरत 'भायप (भ्रातृ) भक्ति' के अतुल्य उदाहरण हैं। संसार ने राज-पाठ हेतु भाइयों के बीच गृह-कलह होते देखा है। यहाँ तक कि भाइयों में परस्पर युद्ध भी छिड़ते देखा है, जबकि राम के भाइयों ने राम की पादुका राजगद्दी पर रखकर उनकी अमानत को संभालने के रूप में राज-काज किया। इस भारत-भूमि पर हनुमान, भीष्म, शंकर जैसे ब्रह्मचारियों और योगियों का भी जन्म हुआ है। इस देश में विद्वान, वीर, योगी, महत्वपूर्ण राजनयिक भी पैदा हुए, जिनका लोहा दुनिया ने माना। श्री कृष्ण, गुरु द्रोण, भीम, अर्जुन जैसे देवों तथा महामानवों ने इस धरती पर जन्म लेकर इसका अलंकरण किया। ये शौर्य एवं वीरता, विनयशीलता, कर्मयोग के साक्षात् स्वरूप थे। ये परम बली विजेता थे। कहना न होगा कि कवि ने यहाँ भारत देश के स्वर्णिम अतीत एवं उसकी महिमा का गुणगान किया है।

विशेषः

1. कवि ने तत्सम शब्दों का यहाँ सुंदर प्रयोग किया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा की अपनी विशेषता है।

2. उपर्युक्त पंक्तियों में भारत के गौरवमयी अतीत एवं परंपरा का जिक्र हुआ है।

3. इसके अलावा पूरी कविता मे अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

चार

"जिसमें दधीचि ..... दूजा वह देश कौन-सा है?"

व्याख्या :

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने यह कहना चाहा है कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ एक से बढ़कर एक दानी, न्यायप्रिय और कलात्मक प्रतिभा से युक्त नरपुंगव पैदा हुए हैं। इस धरा ने दधीचि, राजा हरिश्चंद्र, कर्ण जैसे दानवीर-सत्यप्रिय पुरुष पैदा किए, जो लोक-कल्याण को सर्वोपरि रखने वाले लोग थे। इस धरती ने वाल्मीकि, व्यास तथा कालिदास जैसे महाकवियों को भी जन्म दिया। यह धरा शिक्षित, निष्पक्ष तथा न्यायप्रिय लोगों की धरा रही है। ये सुधीजन यह बता सकेंगे कि संसार में इतनी विविधताओं वाला देश एकमात्र भारत ही है। इस देश के लोग एक परिवार के समान रहते हैं, जहाँ करोड़ों लोग भाई, सेवक और सपूत की तरह इस देश के साथ हैं। संसार में भारत देश उपर्युक्त कारणों से इकलौता और अनोखा है। इतनी विविधताओं के कारण ही इसे प्रायद्वीप तक कहा गया। विश्व में किसी भी देश में इतनी अधिक संस्कृतियाँ, भाषाएँ, भौगोलिक विविधताएँ विरल हैं। ऐसा एक महादेश में भी मिल जाए, तो भी चकित ही हुआ जा सकता है। यह देश अनेकता में एकता का अत्यंत ही उत्कृष्ट उदाहरण है। कवि इस देश के प्रति अपने उद्‌गारों को लेकर बहुत ही निष्ठावान है। यहाँ कवि ने अंग्रेजी साम्राज्यवादी शक्तियों की इस बात का स्पष्टतः उत्तर दिया है कि भारत का वे उपकार करते हैं, जब वे यहाँ शासन करते हैं क्योंकि भारतीय असभ्य हैं वे स्वयं पर शासन नहीं कर सकते हैं। अंग्रेजों का ऐसा मानना असत्यपरक एवं छल-छद्‌मयुक्त था। यह देश प्राचीन काल से आत्मसंभव है।

विशेष :

1. कवि ने तत्सम शब्दों का यहाँ सुंदर प्रयोग किया है, जो द्विवेदी युग की काव्य-भाषा की अपनी विशेषता है।
2. उपर्युक्त पंक्तियों में कवि की देशभक्ति का दर्शन स्पष्टतः किया जा सकता है। कवि इस देश के कण-कण को प्यार करता है।
3. 'सेवक-सपूत' में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। इसके अलावा पूरी कविता में अंत्यानुप्रास अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।
4. उपर्युक्त पक्तियों में परिवर्तन एवं विविधताओं के प्रति कवि का सकारात्मक -दृष्टिकोण देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न-1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. कवि ने कहाँ-कहाँ ईश्वर का अन्वेषण किया है ?

   .....

   .....

   .....

2. कवि को ईश्वर किस रूप में और कहाँ मिलता है ?

   .....

   .....

   .....

   .....

3. कवि के राष्ट्रप्रेम की भावना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

4. 'वह देश कौन सा है' कविता के आधार पर कवि की आदर्श चेतना पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

अभ्यास :

1. पठित कविताओं के आधार पर राम नरेश त्रिपाठी की काव्यगत विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिये।

13.6 सारांश :

- आपने मैथिली शरण गुप्त के दो प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थों के चयनित अंशों का पाठ किया। इन अंशों के माध्यम से आपने जाना कि कवि ने खड़ी बोली में काव्य रचना को संभव किया। इसे काव्य की भाषा बनाते हुए उन्होने कविता की भाषा के संदर्भ में होने वाले तमाम विवादों को समाप्त किया। उपेक्षित स्त्री पात्रों को काव्य जगत में प्रतिष्ठित किया तथा कुछ मिथकीय पात्रों के संबंध में प्रचलित मान्यताओं को नए रूपों में प्रतिष्ठित किया। इनकी कविताओं में तत्कालीन देश-काल की प्रतिध्वनि स्पष्टतया सुनी जा सकती है। भारतीय जीवन आदर्श के महत्वपूर्ण तत्वों को उन्होने काव्य के साँचे में ढाल कर तत्कालीन समाज को जीवन मूल्यों की ओर प्रेरित किया है। आपने यह भी देखा कि सीता हो या यशोधरा, इनमें त्याग और उत्सर्ग की भावना के साथ-साथ स्वाभिमान, स्वतंत्र चेतना आदि के भाव भी भरे हुए हैं। निस्संदेह, मैथिली शरण गुप्त हिंदी के प्रतिनिधि कवि हैं।
- यह इकाई पढ़ने के बाद पं. रामनरेश त्रिपाठी की काव्य संवेदना के बारे में आपकी एक अवधारणा का विकास हुआ होगा। परतंत्र भारत में आमजन में देश भक्ति अथवा राष्ट्र प्रेम की भावना उद्‌बुद्ध करना तत्कालीन रचनाकारों का मुख्य ध्येय था। इस संदर्भ में रामनरेश त्रिपाठी के महत्व को आप समझ सकते हैं। भारतीय प्रकृति, खेत, खलिहान, संपदा, इतिहास, संस्कृति एवं इतिहास-पुरुषों की स्मृति एवं प्रशस्ति में लिखी गई कविताओं में कवि की अनन्यता को भी आप रेखांकित कर सकते हैं। आपने यह भी समझा कि युगीन परिवेश में भटके लोगों को कवि ने किस खूबी से सन्मार्ग दिखाया और पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाई है।

13.7 उपयोगी पुस्तकें

पुस्तकें :

1. रामनरेश त्रिपाठी : व्यक्तित्व और कृतित्व : के. गोपालन नायर
2. हिंदी के गौरव रामनरेश त्रिपाठी : हिंदी भवन, दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी